CASE STUDY

१. **विद्यालय प्रमुख विवरण**

शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय (प्रधान अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय हसनपुर,शिक्षा क्षेत्र – दोहरीघाट
जनपद- मऊ, उत्तर प्रदेश|
Mobile-9454338193
Email-SHAILENDRAPANDEY82@GMAIL.COM

"शिक्षा दान – महा दान"

शीर्षक चरितार्थ करता मेरा जीवन जो मैंने मेरे परिवार और देवस्वरूप गुरुजनों से सीखा और उसको आत्मसात करने का प्रयास किया जो मेरी कर्मभूमि मेरा कार्यस्थल प्राथमिक विद्यालय हसनपुर से शुरु होकर निरंतर समर्पित और अनवरत जारी है|

शिक्षा दान का सफ़र तो पढाई के ही दौरान शुरु हो चुका था जब मैं अपने कनिष्ठो एवं सहपाठियों की पाठ्यक्रम से सम्बंधित समस्या पढा कर दूर कर दिया करता था परन्तु पढाई पूरी करने के पश्चात 18 जुलाई 2011 को उत्तर प्रदेश के परिषदीय विद्यालय प्राथमिक विद्यालय हसनपुर शिक्षा क्षेत्र दोहरीघाट जनपद-मऊ पर प्रथम नियुक्ति होने के बाद यह सफ़र और भी सुहाना हो गया|छोटे छोटे नौनिहालों के भविष्य गढ़ने का मौका ईश्वर सबको प्रदान नही करता| हमेशा उपर्युक्त व्यक्तित्व का चयन करता है और मेरा सौभाग्य था की मुझे यह मौका मिला|

२. **भौतिक एवं भौगोलिक परीस्थिति**

सन् 2001 में अस्तिव में आया मेरा विद्यालय प्राथमिक विद्यालय हसनपुर जनपद मुख्यालय से 45 किमी की दुरी पर पिछड़ा ब्लॉक के अंतर्गत आता है| मेरा विद्यालय ब्लॉक मुख्यालय से 25 किमी की दुरी पर स्थित है|ग्रामसभा-हसनपुर से कुछ दुरी पर सरजू नदी की सीमा शुरु होती है| विद्यालय मधुबन-दोहरीघाट मुख्य सड़क से 200 मी पर एक छोटी नहर के किनारे स्थित है| इस ग्रामसभा के पूर्व में जजौली पश्चिम में बहरामपुर उत्तर में परशुरामपुर और दक्षिण में दोषपूर ग्रामसभा स्थित है| विद्यालय से

400 मी की दुरी पर दूसरी ग्रामसभा के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय स्थित है| विद्यालय के 1 किमी की दुरी पर कुछ निजी विद्यालय भी स्थित हैं|

विद्यालय में कुल 2 कमरे और 1 एकल कक्ष है| 2 शौचालय बच्चे और बच्चियों के लिए पृथक पृथक है| एक छोटा सा किचेन भी है| बहुत ही छोटा प्रांगण है| प्रांगण फूल और छोटे हरे भरे पोधों से भरा है|कुछ सागवान के भी बृक्ष मेरे द्वारा लगवाए गए हैं| चहारदीवारी बनी हुई है|

<u>आबादी, रहन-सहन और पेशा</u>

इस ग्रामसभा की कुल आबादी लगभग 800 के आस-पास है| अनु० जा० और मुस्लिम समुदाय के लोगो की संख्या सामान्य और पिछड़ा वर्ग की संख्या से ज्यादा है|ज्यादातर लोगो का व्यवसाय कृषि और स्वव्यवसाय है|पढ़े लिखे लोगो की संख्या कम है| गरीब और प्रतिदिन पारिश्रमिक कर जीवन निर्वाह करने वालो की संख्या औशत से ज्यादा है|

<u>परिवेश</u>

स्वरोजगार और कृषि मुख्य पेशा होने के कारण बच्चे अभिभावक की मदद करने में सहयोग करते हैं| ग्रामसभा में स्थित मजार और मेला तथा सब्जी मंडी होने के कारण अक्सर बच्चे अपने माँ बाप के साथ उनका सहयोग करने चले जाते हैं| और इस कारण से बच्चों की उपस्थिति प्रभावित होती है|अभिभावकों के साथ आर्थिक सहयोग देने के कारण बच्चों की पढाई प्रभावित होती है|

३. <u>मुख्य चुनौतियाँ</u>

- ✓ छात्र नामांकन और ठहराव|
- ✓ अध्ययन अध्यापन में अरुचि|
- ✓ परंपरागत शिक्षा पद्धति में बदलाव|
- ✓ अभिभावकों का विश्वास जितना और सामंजस्य स्थापित करना|
- ✓ बच्चियों को गृहकार्य से निकाल कर शिक्षा प्रदान करना|

<u>छात्र नामांकन और ठहराव</u>

18 जुलाई 2011 को प्रथम नियुक्ति पाने के साथ ही मुझे विद्यालय का प्रभार और जिम्मेदारियां मिल गयीं| उस समय मेरे विद्यालय में कुल १ अध्यापक (खुद मैं) और २ शिक्षा मित्र थे|

विद्यालय में कुल नामांकन 37 था जिसमे 15-20 बच्चों की उपस्थिति होती थी|

मुस्लिम बस्ती होने के कारण विद्यालय से कुछ दुरी पर एक मजार स्थित है जिसपर हर बृहस्पतिवार को मेला लगता है|मेला लगने के कारण कुछ बच्चे मेला देखने चले जाते थे और कुछ अपने माँ बाप के साथ उनका सहयोग करने चले जाते थे जिनकी दुकान मेले में लगती थी| मंगलवार और शुक्रवार को सब्जी मंडी लगने के कारण बच्चे मंडी चले जाते थे| इस कारण बच्चों की उपस्थिति प्रभावित होती थी|

पढ़े लिखे वर्ग के लोगों का सरकारी विद्यालय पर विश्वास न होने के कारण उनके बच्चे निजी विद्यालय में पढाई करते थे| कुछ अभिभावक सरकारी विद्यालय को अपने स्टेटस से नीचे समझते थे|उनके भी बच्चे निजी विद्यालय में पढ़ते थे|विद्यालय में नामांकन वृद्धि एक बड़ी चुनौती थी|

<u>समाधान</u>

प्रधान अध्यापक होने के कारण अभिभावकों से मुलाकात कर इस समस्या की चर्चा किया परन्तु कोई उचित समाधान नही मिला|अध्यापको से भी बातचीत की परन्तु इसका कोई निराकरण न निकल सका| निर्णय स्वयं ही लेना था|

मैंने निर्णय लिया कि मेला वाले (वृहस्पतिवार) के दिन और मंडी वाले दिन (मंगलवार और शुक्रवार) को बाल प्रतियोगिता कराकर बच्चों को पुरस्कृत किया जाय| बाल प्रतियोगिता (दौड़,नाटक,नृत्य,गीत-संगीत,कला) इत्यादि करना शुरु किया और हिस्सा लेने वाले को पुरस्कृत करना शुरू किया|प्रतियोगिता और पुरस्कार के आयोजन होने पर बच्चे उस दिन अपने अभिभावक के साथ न जाकर विद्यालय आने लगे|उन दिनों अभी मेरी सैलरी भी नही मिल रही थी पर खुद के खर्चे से कुछ निकालकर पुरस्कृत करने लगा|संख्या भी बढने लगी और ठहराव भी होने लगा|

<u>अध्ययन अध्यापन में अरुचि</u>

बच्चों में ठहराव के पश्चात अगली समस्या अध्ययन में अरुचि की आयी|बच्चे विद्यालय तो आते परन्तु खेलने और मौज मस्ती के मूड से|ग्रामीण परिवेश और माँ बाप के कम या बिलकुल शिक्षा में लगाव न होने के कारण उनका मन पढाई में बिलकुल नही

लगता|बच्चों में अनुशासन की कमी थी| बच्चों के साथ साथ उनके अभिभावक भी पढाई को बहुत ज्यदा महत्व नही देते थे|

नयी चुनौती मिली पर हिम्मत नही हारा|अब समय था बच्चों,अभिभावकों और अध्यापकों को मुख्य बिन्दु तक ले जाने का|

<u>**समाधान**</u>

मेरा अगला लक्ष्य था की पठन पाठन को रुचिकर कैसे बनाया जाय|अपने अध्यापको से सलाह मशवरा किया|उनकी भी राय लिया|

मैंने स्वयं और अपने अध्यापकों से कुछ पाठ आधारित गतिविधियाँ करने को कहा|उनको खेल खेल में सिखाने को कहा|उनको उनके परिवेश से जोड़ने को कहा|प्रतिदिन कविता बनाकर Action के साथ गतिविधियाँ करायी जाने लगीं|बच्चों को भी नयी नयी कविता,कहानी,किस्से अपने परिवार से सीखकर आने को कहा जाता| बच्चे भी बड़ी रूचि के साथ घर से कहानी,किस्से सीखकर और यादकर कर आते|उनके माता पिता ,दादी दादा,नानी नाना उन्हें सिखाकर भेजते| ऐसे बच्चे पुरस्कृत भी होते|

पर धीरे धीरे इसमें भी चुनौतियाँ आने लगीं|अभिभावकों और बच्चों को यह प्रक्रिया बोझ लगने लगी| उनको जितना कहा जाता उतना ही करते | अपने मन से शुरू नही करते|फिर वही चीजें वापस आने लगीं|

इस चुनौती से सामना करने का एक ही अस्त्र समझ आया <u>**"प्रेरणा"**</u>|

बच्चे,अभिभावक और यद्यपि अध्यापकों को भी जगाने और प्रेरित करना भी मेरी जिम्मेदारी बन गयी| अब दुसरो को प्रेरित करने से पहले खुद को भी किसी कार्य के लिए प्रेरित करना पड़ता है|यही एक कुशल नेतृत्व का गुण होता है|चीजो को दुसरो से जोड़ने से पूर्व खुद को भी आत्मसात करना पड़ता है|

"थ्री इडियट्स" मूवी से मिलती जुलती मेरी कहानी मेरे लिए प्रेरक का भी कार्य की|

जैसा की कहा है की सारे मनुष्यों में उर्जा छुपी होती है बस उसे जगाने की आवश्यकता है|इस पर कार्य करना शुरू किया|

प्रेरणादायी प्रसंग,संबाद,कहानियां सुनकर,प्रेरक वक्ताओं को सुनकर,प्रेरणादायी मूवी देखकर अपने आप को उर्जिकृत और प्रेरित किया और दुसरे को भी प्रेरित करने और जगाने का कार्य किया| अभिभावकों से उनके घर जाकर मिलकर,विद्यालय बुलवाकर,उनकी जिमीदारियों का एहसास करवाया|उनके बच्चों का हित,उनका भविष्य का बोध कराकर,उनके बच्चों का प्रयास और विकास दिखाकर नित नए नए तरीको से उनको बच्चों को गृह कार्य से हटाकर विद्यालय में नामांकन कराने और विद्यालय उपस्थित होने को प्रेरित किया| अपने अध्यापकों को भी नित नये नये उदाहरण देकर ,नये नये प्रसंग और संबाद सुनकर उनकी सोच बदलने, उनकी सोयी उर्जा और आत्मा को जगाने का कार्य किया|नये नये रास्ते ,नयी नयी विधियाँ को अपने और नये नये नवाचार करने के लिए प्रोत्साहित किया|

<u>मेरे द्वारा किये गए कुछ नवाचार</u>

१. पाठ आधारित ज्ञान का रुचिकर कविताओं के माद्यम से बोध करना|
२. बच्चों में उनकी जिम्मेदारियां का बोध उनको समूह में बांटकर करना|
३. हर बच्चों का जन्मदिवस विद्यालय में मनाना, STAR OF THE DAY,STAR OF THE MONTH,STAR OF THE WEEK, बनाकर अभिभावकों के साथ साझा करना|
४. प्रतिदिन बच्चों द्वारा अपना परिचय देना और खुद को सबके सामने अभिव्यक्त करना|
५. मुल्यान्कन और स्वमुल्यांकन (बच्चों और अध्यापकों के लिए)
६. साप्ताहिक Short movie और Inspirational movie बच्चों और अभिभावकों के लिये|
७. इत्यादि|

बच्चों को प्रेरित करने के लिए युक्ति लगाया|

संयोग से एक बार नवोदय विद्यालय जाने का मौका मिला था| उस समय वहां सुबह की प्रार्थना सभा चल रही थी|नवोदय में प्रार्थना गाजे बाजे के साथ होती है| यह कांसेप्ट मुझे बहुत अच्छा लगा और उसी समय यह प्रक्रिया अपने यहाँ लगाने के बारे में सोच लिया|

कहते हैं न की “जहाँ चाह वहाँ राह”| विद्यालय के लिए एक ऑडियो सिस्टम माईक के साथ क्रय किया|बच्चे अब सुबह की सभा नियमित तौर पर सिस्टम के साथ करने लगे|अभिभावकों को भी यह तरीका बहुत पसंद आया| प्रार्थना सभा में प्रार्थना,राष्ट्र गान,कविता,सामान्य ज्ञान,अपना परिचय इत्यादि सामिल किया गया|

अब मुझे यही समय उपर्युक्त लगा जब बच्चों के अन्दर जोश भरा जाय| उनकी उर्जा जगाकर एक नयी दिशा दी जाय| उनको पठन पाठन की तरफ मोड़ा जाय| प्रार्थना सभा में नित नयी नयी प्रेरणादायी कहानियां सुनाकर उनको प्रेरित करने का कार्य किया| इस प्रकार बच्चे , अभिभावक,अध्यापक को प्रेरित करके उनके अन्दर की सोयी उर्जा को जगा कर पठन पाठन में निरंतर गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करने की ओर कदम बढाता गया|

<u>परंपरागत शिक्षा पद्धति में बदलाव|</u>

शिक्षा को सुगम और सरल बनाना भी एक चुनौती के रूप में मेरे सामने आयी| जैसे- किताब से पढाई,समझने की वजाय रटना ,किसी की बातो को बिना परखे मान लेना,ज्ञान का खुद तक सिमित कर देना इत्यादि |

तरीका और परंपरागत व्यवस्था में बदलाव मेरे लिए चुनौती बन गया| कंप्यूटर की शिक्षा लेने के कारण इसको शिक्षण व्यवस्था में उपयोग करने का विचार आया|

दृश्य श्रव्य शिक्षण विधि का उपयोग ज्यादा कारगर समझ आया| मेरे पास मेरा निजी लैपटॉप होने के कारण बहुत परेशान नही होना पड़ा| नित प्रतिदिन इसका उपयोग शिक्षण में करने लगा| बच्चों के स्तर का उनके पाठ्यक्रम से सम्बंधित विडियो डाउनलोड करता, उसे फ़िल्टर करता और दिखाता| बच्चों को पॉवर पॉइंट (PPT) स्लाइड बना कर दिखाता| पाठ्यक्रम को ज्यादा से ज्यादा सुगम और सरल बनाकर बच्चों के सामने प्रस्तुत करना शुरु किया| बच्चों के लिए ये चीज़ नयी थी इसलिए बड़े ही चाव से देखते और सुनते|

दूसरी समस्या ये थी की जिन अध्यापकों को कंप्यूटर का ज्ञान नही था उन्हें इस तरीके से पठन पाठन में परेशानी आने लगी| मेरी अगली जिम्मेदारी उनको

भी कंप्यूटर से जोड़ना था| मैंने शिक्षक की भूमिका में उनको भी कंप्यूटर का बोध कराया|

बच्चों को बांध कर रखने और शिक्षक की कमी दूर करने का यह नायब और अनूठा तरीका पेश हुआ|

बच्चे तो बच्चे उनके अभिभावकों को भी साप्ताहिक Motivational movies/slides Short films दिखाना शुरु किया|इसका असर ये हुआ की पुरे गावं और न्याय पंचायत में यह बात फ़ैल गयी की प्राथमिक विद्यालय हसनपुर में कंप्यूटर से पढाई कराई जाती है|

इसका प्रभाव ये हुआ की बच्चों की गुणवत्ता में भी सुधार आया और ठहराव भी होने लगा| कान्वेंट विद्यालयों से भी कुछ बच्चों का नामांकन अगले सत्र में हुआ|

अभिभावकों का विश्वास जीतना जितना कठिन होता है उससे ज्यादा कठिन उस विश्वास को बनाये रखना होता है|

नए सत्र में एक नयी शिक्षिका का आगमन हमारे विद्यालय पर हुआ|कुछ अध्यापक संख्या में बृद्धि हुई|सबका सहयोग मिलना शुरु हुआ|साप्ताहिक बैठक अध्यापको का लेने के कारण विद्यालयी समस्या और उसका समाधान भी मिलने लगा|

I.C.T (Information and Communication Technology)

नित नयी नयी चुनौतियां और उन चुनौतियों से लड़ने का जोश, चुनौतियों का हल, और नवाचारो का प्रयोग|

I.C.T (Information and Communication Technology) की शुरुआत मेरे द्वारा सन् 2011 से ही कर दिया गया था परन्तु उसे विस्तार से अस्तित्व में 2016 में लाया|

बच्चों की बढाती संख्या के सामने लैपटॉप की स्क्रीन छोटी पड़ने लगी|

विद्यार्थी जीवन में प्रोजेक्टर से पढाई को आत्मसात करने का प्रयास किया और उसे व्यवहार में लाने का प्रयास किया|

प्रोजेक्टर लगवाने के लिए लम्बा खर्च दिखा| जैसे-प्रोजेक्टर,स्पीकर,इन्वर्टर,बैटरी,साउंड सिस्टम,वायरिंग इत्यादि| कुल 50-55 हज़ार का खर्च|

सारे अध्यापक,ग्राम प्रधान,एस.एम्.सी अध्यक्ष, सदस्य ,समुदाय की एक बैठक बुलाकर इस पर विस्तृत चर्चा किया| सबको यह तरीका बहुत पसंद आया| सबकी सहमती और सबके सहयोग से सारा सामान क्रय कर लिया गया और इनस्टॉल करवा दिया गया| 15 अगस्त 2016 को स्वतंत्रता दिवस महोत्सव के शुभ अवसर पर ग्राम वासियों,ग्राम प्रधान,एस.एम्.सी अध्यक्ष-सदस्य और खंड शिक्षा अधिकारी के उपस्थिती में प्रोजेक्टर **I.C.T (Information and Communication Technology)** का उद्घाटन संपन्न हुआ|ब्लाक का ऐसा एक मात्र विद्यालय जिस पर **I.C.T (Information and Communication Technology)** का प्रयोग कर प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाने लगी|

समुदाय और ग्रामवासियों का विस्वास जीतने का मौका मिला| नामांकन में बृद्धि और ठहराव होने लगा|

समय का दौर बदला|लैपटॉप और पेन ड्राइव तथा पीपीटी,विडियो का स्थान नवीन एप्प्स ने ले लिया|

हमारे उत्तर प्रदेश के **शिक्षा निदेशक(बेसिक) श्री सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह** सर द्वारा Q.R code (Quick Response Code) युक्त पाठ्य पुस्तके अस्तित्व में लाकर विद्यालयों में वितरित की गयीं| इस एप्प्स से हम कोड स्कैन करके पाठ्यक्रम को ऑडियो और विडियो के रूप में सरल और सुगम तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं|इसे हर एंड्राइड उपयोगकर्ता उपयोग कर सकता है| Q.R Code का पाठ्यक्रम में लाना एक क्रांति साबित हो रही है|

“संपर्क फाउंडेशन” द्वारा निर्मित कुछ पुस्तकों का भी पाठ्यक्रम में लाया गया| मेरे द्वारा उसका भी उपयोग किया गया जो अभी बहुत ही कम कुछ गिने चुने लोगो द्वारा उपयोग में लाया जाता था|

I.C.T के प्रयोग से रटने वाली परम्परागत पद्धति में बदलाव आया|बच्चे अब तथ्यों को रटने की वजाय सिखने और समझने लगे|

“मिशन पहचान”

हमारे जनपद के नवागत **बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री ओ.पी.त्रिपाठी जी** द्वारा एक प्रोजेक्ट "मिशन पहचान" चलाया जा रहा है जिसमे श्रीमान जी की ये मनसा है की अध्यापको की पहचान बच्चों के ज्ञान से हो| "बच्चों का ज्ञान, गुरूजी की पहचान"|

"मिशन पहचान" क्या है?

- बच्चा समुदाय और अपने समाज में अपनी पहचान बता सके|
- बच्चे का अधिगम स्तर उच्च हो|
- बच्चे को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान किया जय|
- बच्चे को परिवेश से जोडकर रटने की वजाय समझने की प्रवृती विक्सिस हो|
- हर माह मूल्यांकन कराकर उनकी प्रतिभा की पहचान करना, इत्यादि|

श्रीमान जी की इस मनसा को आत्मसात करके हुए मेरे नेतृत्व में मेरे सहयोगी अध्यापको द्वारा इसको सफल बनाने में पूरा प्रयास किया गया और काफी हद तक सफल साबित हुए|

<u>अभिभावकों का विश्वास जितना और उनसे सामंजस्य स्थापित करना|</u>

बच्चों को ज्ञान देकर ही हम अभिभावकों का विश्वास जीत सकते हैं| और यह कार्य हमारी पूरी विद्यालयी टीम द्वारा किया गया| निम्न बिन्दुओ पर कार्य किया गया|

- अभिभावकों के समक्ष बच्चों को प्रस्तुत करना|
- अभिभावकों को विद्यालय से जोड़ना|
- अभिभावकों को समय समय पर विद्यालय पर बुलाना|
- अभिभावकों से मिलने उनके घर पर जाना|
- अभिभावकों को प्रेरित करना|
- एस.एम्.सी और पी.टी.एम् आयोजित कराना|
- बच्चों के साथ अभिभावकों को भी सम्मानित करना|
- अभिभावक और समुदाय के पारिस्थितिकी को समझकर, उनकी भावना को समझ भावनात्मक रुपे से जुडकर उनका विश्वास जितना और उनसे सामंजस्य स्थापित करना|

अगर हम N.C.F (National Curriculum Framework 2005) **रास्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रुपरेखा 2005** की बात करे तो भी हम पाते हैं की केंद्र में बच्चे होने के कारण हमे बच्चों का ज्ञान,उनकी समझ,उनकी सक्रिय भूमिका की ओर ही ध्यान देने की आवश्यकता है|सिखाने में हमे नित नयी नयी रणनीतिया बनानी पड़ती हैं|विभिन्न चरणों में इसे कार्यान्वित करना पड़ता है|सभी बच्चों की भागीदारी सामान हो क्योंकि सभी बच्चों के अधिकार समान हैं|नयी तकनीक का प्रयोग किया जाय| नए नए नवाचार ,गतिविधियाँ का प्रयोग,समुदाय का सहयोग इत्यादि की भूमिका महत्वपूर्ण है|

इन सबका मेरे नेतृत्व में मेरे विद्यालय पर प्रयोग किया जा रहा है|

बच्चियों को गृहकार्य से निकाल कर शिक्षा प्रदान करना|

एक और चुनौती मेरे सामने आयी| लोग बछो को स्कूल भेजते थे पर बच्चियों को घर पर रोक लेते थे|उनकी शिक्षा प्रभावित होती थी| उपस्थिति और ठहराव भी कम था|

समाधान

अभिभावकों से सामंजस्य बना कर उनसे चर्चा करके विभिन्न उदाहरण देकर कार्य किया गया|नुक्कड़ नाटक में बच्चियों को सम्मिलित किया गया|उनकी प्रतिभा को अभिभावकों के सामने प्रस्तुत किया गया| बच्चियों के भविष्य के बारे में उनको बताया गया|

महिलाओ का सहयोग लिया गया|घर घर जाकर जन संपर्क कर वैसी बच्चियों पर कार्य किया गया जो घर के कार्यो और माता पिता के सहयोग तक ही सिमित थी|

परिणाम

आज वर्तमान में हमारे यह बच्चों से ज्यादा बच्चियों का नामांकन है|बच्चियों की भागीदारी भी बच्चों से ज्यादा होती है|

४. **मैं और मेरा आज एक नेतृत्व कर्ता के रूप में|**

मेरे द्वारा विद्यालय का नेतृत्व करना एक अच्छी चुनौती थी| अलग अलग विचारधाराओं के लोगो से मिलना , उनके साथ सामंजस्य स्थापित करना,अपनी बातों का प्रभाव डालना, अपने सहयोगियों को साथ लेकर एक समूह में बांधकर ले चलना,कम से कम संसाधनों में अधिक से अधिक परिणाम देना इत्यादि अपने आप में एक बड़ी चुनौती थी| पर इन चुनौतियों का सामना अपने बुद्धि विवेक से करना भी अद्भुत अनुभव था|

इसी क्रम में कुछ दिन पहले जनपद स्तर पर आयोजित परीक्षा में पास करके A.R.P (Academic Resource Person) के रूप में ब्लाक का नेतृत्व करने का एक मौका और जिम्मेदारी प्राप्त हुई है | इसका निर्वहन मेरे द्वारा वखुबी किया जा रहा है| विद्यालयों पर जाकर उनका अनुसमर्थन करना, उनको नयी ऊचाइयों पर पर पहुचने के लिए प्रेरित करना, बच्चों को पाठ बोध करने के लिए नयी नयी विधियाँ बताना, गतिविधियाँ करवाना, अपने नवाचारों से अवगत कराना मेरा ध्येय है| उन अध्यापको के साथ मिल जुल कर विद्यालयी गुणवत्ता में निरंतर सुधर कर समुदाय का विश्वास जितना , समुदाय से सामंजस्य बनाकर सरकार की मनसा को सफल बना कर उन बच्चों का भविष्य सुरक्षित करने का काम मेरे द्वारा किया जा रहा है|

नेतृत्व करना केवल अपनी बात मनवाना ही नही है वरन् सबकी राय लेकर सबको साथ लेकर और सबकी सहमती लेकर सही समय पर सही निर्णय लेना है| पुरे सहयोगियों को एक सूत्र में बाँध कर चलना एक नेतृत्व कर्ता का दायित्व है| बुरे समय में भी किसी का साथ न छोड़ना एक दायित्व है|

वर्तमान समय में मेरे विद्यालक की स्थिति

1. कुल 5 अध्यापक (1 प्रधान अध्यापक और 4 सहायक अध्यापक)
2. 2 शिक्षा मित्र
3. 120 नामांकन (72 बालिका + 48 बालक)
4. प्री प्राइमरी (41 बच्चे) मेरे द्वारा चलाया जाता है|
5. समस्त स्वप्रेरित अध्यापक|
6. हरा भरा प्रांगण(फुल एवं पौधों से युक्त |
7. 4 शौचालय (2 बालक+2 बालिका)
8. 3 कक्षा कक्ष

9. I.C.T युक्त शिक्षण
10. साप्ताहिक मूल्यांकन
11. प्रेरित प्रार्थना सभा
12. पी.टी और योग कक्षायें|
13. उपचारात्मक कक्षायें|
14. समुहीक कार्य प्रणाली|
15. सहभागिता शिक्षण
16. क्रीडा और पाठ्यक्रम से अतिरिक्त गतिविधियाँ|
17. प्रोत्साहन
18. सामूहिक सहभागिता एवं सहयोग|
19. सुसज्जित , सुन्दर एवं आकर्षक कक्षा कक्ष एवं विद्यालयी वातावरण|
20. अभिभावक अध्यापक बैठक (P.T.M)

========================***************========================